International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

संकीर्ण मानसिकता द्वारा सृजित जातीयता

डॉ. विकास पाटील 'विकिरण'

श्रीमती कुसुमताई राजारामबापू पाटील कन्या महाविद्यालय, इस्लामपुर

Corresponding Author - डॉ. विकास पाटील 'विकिरण'

DOI - 10.5281/zenodo.10873249

प्रस्तावना :

वैज्ञानिक अविष्कार ने समूचे विश्व को अचरज में डाला हैंI अविष्कार ने मनुष्य जीवन ख़ुशहाल और समृद्ध बनाया हैI अविष्कारों की नींव मनुष्य की असीम बुद्धिमत्ता हैI जिसके बूते और परिश्रम पर मनुष्य कई सफलताएँ प्राप्त करता हुआ दिखाई देता हैI बदलते समय के अनुसार अविष्कार सामाजिक हित छोड़कर व्यक्तिगत हित के लिए बनने लगेI जिसका आधार सिर्फ अपना परिवार, परिजन तथा आने वाली पीढ़ी को समृद्ध करना ही उद्देश बन गया हैI मनुष्य ने अपने निजी स्वार्थ के लिए बनाए अविष्कारों की दाह आज भी समस्त मनुष्य जाति को प्रभावित करती है तथा एक-दूसरे के प्रति द्वेष, ईर्ष्या, घृणा पल्लवित करती हैI स्वार्थ पर आधारित ऐसा अविष्कार समस्त मनुष्य जाति को तोड़कर, विशिष्ट व्यवस्था में बाँधकर, विशिष्ट गुट में डाल देता हैI इस व्यवस्था की विद्रूपता इतनी भयानक है कि उस व्यक्ति को समाज में कितनी प्रतिष्ठा होगी, उसका व्यवसाय, कार्य यह व्यक्ति के जन्म पहले से तय करती हैI यह व्यवस्था किसी को पूरे अधिकार देती है, तो किसी के छीन लेती हैI जिसमें सामाजिक सरोकार टूट जाता हैI नतीजन अपने अधिकारों के लिए हर व्यक्ति अपना-अपना गुट बनाते हुए दिखाई देते हैंI यही गुट विभिन्न जातियों का लेबल लेकर अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करते हुए परिलक्षित होते हैंI उदय प्रकाश ने 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी के द्वारा बिखरती हुई मनुष्यता, टूटते हुए सामाजिक सरोकार के कारण खोजते हुए अफ़वाहों की नींव पर रचित और संकीर्ण मानसिकता द्वारा निर्मित जातीयता की खोखली व्यवस्था को बेनकाब किया हैI

पारिभाषिक शब्द : *अविष्कार, सभ्यता-संस्कृति, वर्ण व्यवस्था*

गौरवशाली भारतीय सभ्यता-संस्कृति में वर्ण व्यवस्था का दाग लगा हुआ हैंI जिसकी दाह में समस्त मानवता बिखरती हुई दिखाई देती हैI वर्ण व्यवस्था शिक्षित लोगों द्वारा बनाया हुआ मीठा जहर है, जो सिर्फ अपवाहों को पिरोकर बनाया गया हैI वर्ण व्यवस्था ने लोगों को विभिन्न वर्णों में बाँट दिया तथा उनके जीवन का उद्देश स्पष्ट करते हुए उनके अधिकार छीन लिए, अपवाहों के बूते पर उन्हें बुद्धिहीन साबित करते हुए उन्हें सेवक बना दियाI भूमंडलीकरण के युग में भी वर्ण व्यवस्था की दाह बढ़ती हुई दिखाई देती हैI वर्ण व्यवस्था जातीयता की नींव कह सकते हैंI

चंद लोग अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए लोगों को आपस में लड़ाते हैं और वे अपना

स्वार्थ साधने हेतु जाति का सहारा लेते हैं। जातीयता का भूत फैलता ही जा रहा हैI जातियता इतनी तीव्र हो गई है कि लोग अपने घर-द्वार, रहन-सहन, उत्सव-त्यौहार, धर्म आदि में भी उसे घसिट लाए है। जिसके कारण लोग बिखरते गए, साथ ही श्रेष्ठता और नीचता की होड़ में वे आपस में झगड़ते दिखाई देते हैं। जिसके कारण सदियों से अन्य जाति के लोगों का शोषण होता हुआ दिखाई देता है। शोषित लोग इस अत्याचार का बदला लेना चाहते हैं जो सदियों से वे सहते आए है। जातियता ने आज रौद्र रुप धारण किया है। जिसका वास्तविक और यथार्थ चित्रण उदय प्रकाश जी ने अपनी 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी में किया है।

राहुल भारत के सुप्रसिद्ध विश्वविद्यालय में पढ़ने आता है। विश्वविद्यालय का माहौल और स्थिति देखकर अपने विचारों में घिरता हुआ दिखाई देता है। विश्वविद्यालय सामाजिक तथा वैयक्तिक उन्नति का शैक्षिक मंदिर हैI पर विश्वविद्यालय में राजनीति, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, जातियता आदि को देखकर राहुल दहल जाता है। राहुल जातियता फैलाने वाले चेहरों को देखता है तब उसे सभी 'क्रिटर्स' नजर आते हैं। सर्व भक्षी क्रिटर्स जो पृथ्वी पर पैदा नहीं हुए। दूसरे ग्रह, दानव लोग या परलोग से आकर हर जगह फैले हुए है। धीरे-धीरे उन्होंने अपना तंत्र बनाया है। इसके बारे में राहुल कहता है ''भाषा में, राजनीति में, मंदिरों में, संसद में, प्रशासन, पूजा-पाठ, जन्म-मरण, खाने-पीने की चीजों से लेकर दवाइयों और सूचना-संचार माध्यमों तक, अखबार, किताबों, विश्वविद्यालय, टी.वी. चैनलों, बैंकों से लेकर कविता, कला और विचारों तक फैले है।''[१] राहुल कहता है वह यही क्रिटर्स है जिन्होंने इस देश पर आज तक साम्राज्य किया है। उनका काम करने का तरीका और लहाजों के कारण उनके सामने सभी परास्त होते हुए दिखाई देते हैं। इतिहास भी इसका गवाह है कि यह लोग अपवाहों का जहर घोलकर व्यक्ति का अस्तित्व मिटाते हैं।

यही जाति अन्य जातियों से श्रेष्ठ तथा बुद्धिमान है यह सिद्ध करने के लिए कही अफवाहों का निर्माण करती हैंI कोरी जाति को बुद्धिहीन बनाने के लिए कई किवदंतियां बनाई हैI जिसका उद्देश केवल एक मात्र है अपना अस्तित्व श्रेष्ठ बनानाI कितना बड़ा छल यह जाति आमजनों के साथ कर रही हैI मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान होकर भी इन्होंने अपने निजी स्वार्थ के लिए उन्हें विभाजित कियाI उन्हें मानसिक, वैचारिक गुलाम बनायाI

इस तरीकों के बारे में राहुल कहता है यह क्रिटर्स के पास वह हत्यार है जिसके बूते पर भारतीय इतिहास खड़ा है, सवाल यह है कि उन्होंने सत्य लिखा या झूठ पर उन्होंने अपने हित और स्वार्थ के लिए लिखा है। उन्होंने मीड़िया, समाचार और भाषा को अपने हाथ में लिया है। उनका हत्यार है अफवाह और झूठ का संसार निर्माण करना। यह क्रिटर्स जिसे खत्म करना चाहते हैं उनके बारे में पहले अफ़वाहें फैलाई जाती है। उन्हें अंदर से तोड़ा जाता है। एक-दूसरों के बीच गलतफहमी फैलाकर आपस में लड़ाते हैं। क्रिटर्स को इसके लिए शताब्दियों से आनुवंशिक प्रशिक्षण दिया जाता है। उसके उदाहरण

है ब्राह्मण ग्रंथ और तमाम पुराण इस झूठ पर ही रचे गए है।

राहुल भी अफ़वाहों का शिकार होता हैI अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए वह ट्यूशंस लेता थाI विश्वविद्यालय में चल रही राजनीति, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, जातियता आदि का राहुल खुल कर प्रतिरोध करता हैI नतीजन राहुल की आर्थिक नाकाबंदी करके उसे तोड़ने का प्रयास किया जाता हैI राहुल की ट्यूशंस बंद करने के लिए उसके बारे में अफ़वाहें फैलाई जाती है कि राहुल को एक लड़की को ट्यूशन में 'कोकशास्त्र' पढ़ाते हुए पकड़ा गया था और उसकी पिटाई के बाद वहाँ से भगा दिया थाI हालाँकि कोई ऐसी घटना नहीं हुई थीI राहुल को तोड़ने के लिए अफ़वाहों के बल पर उसकी आमदनी बंद की जाती हैI जिससे राहुल का ध्यान विश्वविद्यालय में चल रही राजनीति, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, जातियता आदि से हट जाएI

राहुल दुविधा में पड़ता है जिन्होंने वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया, उन्होंने हजारों सालों से हमें गुलाम बनाया। क्या आज भी स्वतंत्र भारत में हम गुलाम है? भले ही हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र है? पर वैचारिक गुलाम आज भी है क्योंकि हर जगह के साहित्य पर इस क्रिटर्स ने काबू पाया है। राहुल के मतानुसार आज जो ग्रंथालय में स्थित हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल, अनामदास का पोथा-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और निराला द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' इन तीनों किताबों के लेखक क्रिटर्स है। यह वही जाति है जिन्होंने अन्य जातियों को गुलाम बनाने के लिए और खत्म करने के लिए हमेशा प्रयत्न किए है। यह कैसी विडम्बना है कि आज उनकी ही क़िताबें पढ़ी जा रही है। इस वैचारिक द्वंवदव के बारे में राहुल कहता है ''मेरे मस्तिष्क और मेरे हृदय पर किसका प्रभाव और आधिपत्य है? वह भाषा जिसमें मैं बोलता हूँ, सोचता हूँ, लिखता हूँ, वह किसके अधीन है?''[२]

इस जाति ने ऐसी विचारधारा बनायी है और दूसरों के विचारों में बोयी है। जिसके कारण ब्राह्मण शारीरिक श्रम से मुक्त हो गया है तथा दूसरों के परिश्रम, बलिदान और संघर्ष को भोगने वाली संस्कृति के दुर्लभ प्रतिनिधि बन गए है। जिन्होंने पाप-पुण्य और स्वर्ग-नरक की संकल्पना रचकर धरती पर अपने लिए स्वर्गलोग बनाया है। शताब्दियों से भाषा, अंधविश्वासों, षडयंत्रों, संहिताओं और मिथ्या चेतना के ऐसे मायालोक को जन्म दिया है। जिसके जरिये वह अन्य जातियों की चेतना, उनके जीवन और समूचे समाज पर शासन कर सके। वर्तमान की सभी पत्र-पत्रिकाओं के संपादक, देश में दिए जाने वाले पुरस्कार, महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ, अकादेमियाँ आज भी उनकी कब्जे में हैं। इसी कारण आज भी हम स्वतंत्र होकर भी वैचारिक गुलाम बने हुए है।

'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी का नायक राहुल देश की वर्तमान स्थिति को देखकर पीड़ित होता है। उसके मन में कई सैलाब उठे हुए नजर आते हैं। वह कहता है वर्तमान में हम किसे इंडियन कहे? दिल्ली, यू.पी. और बिहार के प्रोफेशनल पोलिटीशियंस, व्यापारी, दलाल, करप्ट

ब्यूरोक्रेट्स, क्रिमिनल्स और चीटर्स इंडियन ही है? जब भी नेशनलिज्म की बात छेड़ती है तो हमेशा पाकिस्तान ही क्यों दिखाई देता है? दूसरे ताकतवर देश हमारे सामने क्यों नहीं है जिन्होंने हमें गुलाम बनाया, देश को लुटा, जातियता जहर घोला उनके प्रति हम चुप रहते हैं। देश के चंद लोगों का 'राष्ट्रवाद' मुसलमानों से नफरत और अंग्रेजों की चापलुसी के सिद्धांत पर आधारित था। यही वजह थी राष्ट्रवाद सिर्फ पाकिस्तान के सामने हथियार उठाता था और पश्चिम के नव औपनिवेशिक ताकतों के सामने अपनी पूंछ निकालकर हिलाता था। यह लोग इतने शातिर थे कि समूचे दक्षिणी एशिया में विद्रोह होगा। इस विद्रोह को जिस प्रकार 'ईस्ट इंडिया कंपनी' ने 1857 का स्वाधीनता संग्राम को कुचलता था। इसी प्रकार इस विद्रोह को दबाया जायेगा। देश में फिर से कोई अधनंगा, वंचित और दरिद्रों में से एक नया प्रकाश इस अंधकार में से निकलकर सटोरियों, दलालों, अपराधियों और ठगों के इस भ्रष्ट ब्राह्मन-बनिया बाजार व्यवस्था को निहत्था चुनौती देगा? राहुल की इस मनोदशा के बारे में लिखते हैं '' क्या अब हमारी बारी है? ...कौन रावण की वे संताने, जिन्हें पुलत्स्य ने समुद्र में फेंक दिया था? क्या वे लौट आये हैं और अंग्रेजों ने सत्ता दरअसल उन्हीं को हस्तांतरित की थी?''[३]

देश की वर्तमान स्थिति के बारे में सोचकर राहुल आतंकित होता है। बढ़ती महंगाई, दहेज के बिना घर बैठी कुँवारी बेटियाँ। शिक्षित पर बेरोजगार बेटे, जो शर्म के कारण दिन-भर घर से गायब रहते हैं। जिनमें अपार क्षमता है और बुद्धिमत्ता है। परिवार का खर्चा चलाने के लिए लड़कियाँ 'ब्युटी पार्लर' खोलती है। पर सच्चाई यह है कि वह ब्युटी पार्लर की आड़ में अपना तन बेचती है। कैसी है यह बेबसी? संसद ओर विधान सभाओं में हिस्ट्र शाटर्स, हत्यारे, तस्कर, विदेशी कंपनियों के दलाल, जमाखोर और नंबर दो की कमाई करनेवाले बेईमान भर गये थे। जिन पर गबन, ठगी और भ्रष्टाचार के मुकदमे चल रहे थे। जज रिश्वत खा रहे थे। पुलिस अपराधियों से मिल गयी थी और ईमानदार और न्याय मांगते हिंदुस्तानियों के खून में लिथड़ी हुई थी। राहुल कहता है यह 'क्रिटर्स' है। रावण की संताने जो समुद्र से लौट आई है अब उनके हाथ सब कुछ है ... सत्ता, पूंजी, भाषा, शब्द, अखबार, कंप्यूटर, टी.वी...अंतरिक्ष तक जाते उपग्रह, परमाणु बम और इतना बड़ा बाजार। सब कुछ इनके हाथ में है सभी आमजन उनके हाथ की कठपुतलियाँ है। राहुल ने इन क्रिटर्स को पहचान लिया था। जैसे हिंदी विभाग के ब्राह्मण अध्यापक, विश्वविद्यालय के वी.सी. अशोक अग्निहोत्री, लोकनिर्माण मंत्री जोशी आदि से वह संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है।

राहुल और अंजल जोशी एक-दुसरे से बेहद प्यार करते हैं। राहुल सोचता है मैं एक ब्राह्मण लड़की से प्यार करता हूँ जिन्होंने सदियों से अन्य जातियों को कुचला है, इस्तेमाल किया है, उन्हें खिलौना बनाया है। जब चाहा खेला, जब चाहा मिटा दिया। तो क्या मैं वास्तव में एक सेंटीमेंटल जोकर हूँ। मुझे कुछ नहीं मिलेगा। आय.एम आल्वेज अ लूजर। राहुल सोचता है जब फैसले का वक्त आयेगा, मुझ में और अपनी जाति में से किसी एक

को चुनने का सवाल उठाया जाय तो ये लड़की अपनी जाति को चुनेगी। ये पॉवर को चुनेगी। मुझे नहीं। वही जाति, जिसकी अनैतिक सत्ता मेरे और मेरे जैसे करोड़ों लोगों के लिए किसी अभिशाप की तरह है। वही 'क्रिटर्स' जिन्होंने शताब्दियों से अन्याय, अत्याचार, भ्रष्ट आचरण और भोगवाद का अश्लील नरक यहाँ पैदा कर रखा है। उसी रावण की संततियाँ, जिसने सीता का अपहरण करके राम का समूचा निर्वासित जीवन तबाह कर डाला था।

निष्कर्ष :

'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी का नायक राहुल जातियता के बवंडर में घिरा युवा मन है। जो जातियता के इस भूत के साथ भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और वैचारिक संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। जातियता के कारण आज लाखों युवक जिनके पास अपार क्षमता और बुद्धिमत्ता होकर भी आज वह उनके अधिकार से वंचित है। ब्राह्मण जाति ने अपने सुख के लिए और परिश्रम से मुक्ति पाने के लिए जाति का निर्माण किया है। जिसके कारण वह जाति सदियों से सुखी है और अन्य जातियाँ सदियों से दुःखी है। शोषित जातियाँ इसका प्रतिशोध लेना चाहती हैं। पर यह जाति इतनी शक्तिशाली और बुद्धिमान है कि उन्होंने महत्त्वपूर्ण जगहों पर अपना कब्जा बना रखा है। जिसके कारण धरती पर किसी भी जाति की सत्ता प्रस्थापित हो यह जाति राज करती हुई नजर आती है। इस जाति की विशेषता यह कि किसी को ख़त्म करना है तो उसके बारे में पहले अफ़वाहों को फैलाते हैं जिसका आधार सिर्फ और सिर्फ झूठ होताI वर्ण व्यवस्था, जातीयता इन्हीं संकीर्ण मानसिकता द्वारा सृजित झूठा सच हैI

संदर्भ :

१) उदय प्रकाश – पीली छतरीवाली लड़की, पृष्ठ ५५
२) उदय प्रकाश – पीली छतरीवाली लड़की, पृष्ठ ९८
३) उदय प्रकाश – पीली छतरीवाली लड़की, पृष्ठ १३१